

ग्लोबल ट्रेड मोमेंटम एंड आउटलुक फॉर इंडिया

प्रलिस के लयि:

[वाणजियकि नरियात](#), [मुद्रास्फीत](#), [मौद्रकि नीत](#), [रूस-युकरेन](#), [PMI](#)

मेन्स के लयि:

ग्लोबल ट्रेड मोमेंटम एंड आउटलुक फॉर इंडिया

चर्चा में क्यों?

अप्रैल 2023 में भारत का [वाणजियकि नरियात](#) पछिले वर्ष की तुलना में 12.7% कम होकर 34.66 बलियिन अमेरिकी डॉलर के साथ छह महीने के नचिले सतर पर पहुँच गया। इसी तरह इसी अवधि के दौरान आयात में भी 14% की तीव्र गरिवट आई, जो 49.90 बलियिन अमेरिकी डॉलर था।

- आयात और नरियात में ये कमी जो धीमी वैश्वकि मांग की बड़ी प्रवृत्तिका संकेत है, भारत के साथ-साथ शेष वशिव भी इससे प्रभावति है।

वैश्वकि व्यापार में वर्तमान प्रवृत्तिका:

- कमज़ोर आर्थकि गतविधियाँ:
 - वशिव सतर पर आर्थकि वकिस में मंदी आई है, जसिका अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
 - वभिन्न देशों में कमज़ोर आर्थकि स्थितियों ने उपभोक्ता खर्च और नविश को कम कर दिया है, जसिसे व्यापार की मात्रा प्रभावति हुई है।
- मुद्रास्फीत और सख्त मौद्रकि नीतियाँ:
 - कई देश बढ़ती [मुद्रास्फीत](#) का सामना कर रहे हैं, जसिने केंद्रीय बैंकों को [सख्त मौद्रकि नीतियाँ](#) को लागू करने हेतु प्रेरति कयि है।
 - उच्च ब्याज दरें और सख्त ऋण शर्तें उपभोक्ता क्रय शक्तिको कम करके तथा व्यवसायों हेतु सख्त लागत को बढ़ाकर व्यापार को प्रभावति कर सकती हैं।
- रूस-युकरेन संघर्ष के कारण आपूर्त शृंखला में बाधा :
 - [रूस-युकरेन](#) के बीच चल रहे संघर्ष ने वशिष रूप से यूरोप में आपूर्त शृंखलाओं को बाधति कर दिया है।
 - इस संघर्ष ने उच्च ऊर्जा और क्मोडिटी की कीमतों को बढ़ावा दिया है, व्यापार प्रवाह को प्रभावति कयि है एवं व्यवसायों हेतु लागत में वृद्धिकर दी है।
- वत्तीय असथरिता:
 - करपिटो एक्सचेंज FTX और अमेरिका में कई बैंकों जैसे वत्तीय संस्थानों के पतन ने वत्तीय असथरिता उत्पन्न कर दी है।
 - वत्तीय क्षेत्र में आत्मवशिवास की कमी संभावति संक्रमण के बारे में चति पैदा करता है और वैश्वकि व्यापार पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

भारत, यूरोप और अमेरिका में व्यापार की स्थिति:

- यूरोपीय संघ (EU):
 - फरवरी 2023 में यूरोपीय आर्थकि पूर्वानुमान था कयिह क्षेत्र सतिंबर 2022 के आसपास वकिसति होने वाली मंदी में प्रवेश करने से बच जाएगा।
 - यूरो क्षेत्र में मुद्रास्फीत के संदर्भ में मई 2022 में भोजन, शराब और तंबाकू की कीमतों में वृद्धिकी उच्चतम वार्षकि दर थी। इसके बाद गैर-ऊर्जा औद्योगिक वस्तुओं, सेवाओं और ऊर्जा का स्थान था।
- अमेरिका:
 - संयुक्त राज्य अमेरिका में मई 2023 में [फेडरल रजिस्टर](#) के अनुसार, पछिले वर्ष के मध्य की तुलना में मुद्रास्फीत में सुधार हुआ था। हालाँकि मुद्रास्फीतिका दबाव उच्च बना हुआ है और मुद्रास्फीतिको 2% के वांछति लक्ष्य तक कम करने में काफी समय लगने की

संभावना है।

- जेपी मॉर्गन ग्लोबल मैनुफैक्चरिंग **परचेज़िंग मैनेजरस इंडेक्स (PMI)** मई में लगातार तीसरे महीने 49.6 पर रहा, जो कारोबारी स्थितियों में मामूली गिरावट का संकेत है। उत्पादन ने चार महीनों के लिये वृद्धि दिखाई, लेकिन मुख्य रूप से नए के बजाय मौजूदा आदेशों को पूरा करने के कारण।

■ भारत के लिये आउटलुक:

- अमेरिका और चीन के बाद यूरोपीय संघ भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है।
- यूरोपीय संघ और अमेरिका जैसे बाजारों से वैश्विक मांग अनुकूल नहीं है और अगले कुछ महीनों के लिये मांग पर दृश्य आशावादी नहीं है।
- भारत वैश्विक मंदी के संभावित प्रभाव का सामना कर सकता है, विशेष रूप से अमेरिका में, जो भारत के लिये एक प्रमुख व्यापारिक भागीदार है।
- मंदी भारत के व्यापारिक निर्यात की मांग को प्रभावित कर सकती है, हालाँकि सेवाओं के निर्यात के मज़बूत रहने की उम्मीद है।
- यदि आयात का स्तर कम रहता है तो वस्तुओं की कीमतें स्थिर हो जाती हैं और भारतीय रुपए का मूल्य अंतरराष्ट्रीय बाजार में स्थिर रहता है। हालाँकि तेज़ी से सुधार आयात मांग पर दबाव डाल सकता है।
- औसत वृद्धि की लंबी अवधि को पार करते हुए कुछ गैर-कच्ची वस्तुओं और गैर-आभूषण खंडों ने पिछले वित्तीय वर्ष 2022-23 में 15% की वृद्धि दिखाई है।
- इससे संकेत मिलता है कि भारत में घरेलू मांग सुदृढ़ बनी हुई है।
- आयात में कमी का श्रेय तेल की स्थिर कीमतों को दिया जा सकता है, जिसने भारत के आयात बलों को कम कर दिया है।

आर्थिक मंदी का अंतरराष्ट्रीय व्यापार और व्यक्ति की कर्य शक्ति पर प्रभाव:

- आर्थिक मंदी के दौरान वस्तुओं और सेवाओं की समग्र मांग में कमी के कारण निर्यात और आयात दोनों सहित अंतरराष्ट्रीय व्यापार में काफी गिरावट आई है।
- लोग वविकाधीन खर्च से बचने की प्रवृत्ति रखते हैं जो विशेष रूप से कुछ आयातों और स्थगित खर्चों को प्रभावित करता है।
 - इसके परिणामस्वरूप इंजीनियरिंग सामान, रतन एवं आभूषण, रसायन, रेडीमेड वस्त्र, प्लास्टिक और पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात वर्ष 2023 में धीमी गति से कम हुआ या बढ़ा है।
- मुद्रास्फीति, कीमतों में असमान वृद्धि, विशेष रूप से भोजन और ऊर्जा जैसी आवश्यक वस्तुओं में व्यक्ति की कर्य शक्ति को नष्ट कर देती है। हालाँकि यदि आयातित उत्पाद घरेलू विकल्पों की तुलना में सस्ते हैं, तो लोग आयातित वस्तु का विकल्प चुन सकते हैं।
- मुद्राओं के बीच वनिमिय दर भी किसी व्यक्ति की कर्य शक्ति का निर्धारण करने में एक अहम भूमिका निभाती है। इसके अतिरिक्त मुद्रास्फीति विकासशील देशों में पूंजी के प्रवाह को प्रभावित करती है।

आगे की राह

- सरकार को इस स्थिति के उत्तर में निर्यात गति में विविधता लाने और बनाए रखने के तरीकों का पता लगाने के लिये विभिन्न मंत्रालयों के साथ चर्चा करनी चाहिये।
- कम आयात के बारे में चिंताओं को दूर करने के लिये यह पहचान करना महत्वपूर्ण है कि कुछ गैर-कच्ची वस्तुओं और गैर-आभूषण खंडों ने मज़बूत घरेलू मांग का संकेत देते हुए सुदृढ़ वृद्धि दिखाई है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिये एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है। वस्तुओं की कीमतों में स्थिरता और भारतीय रुपए का मूल्य कम आयात स्तर बनाए रखने में सहायता कर सकता है।
- वैश्विक आर्थिक स्थितियों की निगरानी करना, उभरते बाजारों को लक्ष्य करने के लिये निर्यात रणनीतियों को अपनाना और आर्थिक विकास को बनाए रखने के लिये घरेलू मांग को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, पिछले वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2023)

- कथन-I: कोविड विश्वमारी के बाद के हाल के वगित काल में पूरे विश्व में अनेक केंद्रीय बैंकों ने ब्याज दरें बढ़ा दी थीं।
- कथन-II: आमतौर पर केंद्रीय बैंक मानते हैं कि उनके पास बढ़ती हुई उपभोक्ता कीमतों का, मौद्रिक नीतिके उपायों से प्रतिकार करने की सामर्थ्य है।

उपर्युक्त कथनों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?

- कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है
- कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या नहीं है
- कथन-I सही है किंतु कथन-II गलत है
- कथन-I गलत है किंतु कथन-II सही है

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- कोविड विश्वमारी/महामारी के बाद के हाल के वगित काल में विश्व भर में अनेकों केंद्रीय बैंकों ने महामारी के उपरांत की मुद्रास्फीति को रोकने के लिये ब्याज दरों में बढ़ोतरी की थी। उदाहरण के लिये RBI की मौद्रिक नीतिसमिति भी 2022 से कई बार दरों में बढ़ोतरी कर चुकी है। **अतः कथन 1 सही है।**
- केंद्रीय बैंकों को आमतौर पर वस्तुओं की बढ़ती कीमतों को नियंत्रित करने का कार्य सौंपा जाता है। केंद्रीय बैंक द्वारा आर्थिक उतार-चढ़ाव का प्रबंधन करने तथा मूल्य स्थिरता प्राप्त करने के लिये मौद्रिक नीति का उपयोग किया जाता है। **अतः कथन 2 सही है।**

स्रोत: द द्रिष्टि

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/global-trade-momentum-and-outlook-for-india>

